Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अप्रैल, मई /2024 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

April,May/2024

Date of Publication:15-05-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

16.2.2024 को मौलाना अब्दुल मोमिन राशिद साहिब नाइब सदर अव्वल की सदारत में आयोजित रिफ्रेशर क्लास कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) का दृश्य।

28.4.2024 को बैंगलोर (कर्नाटक) में ख़िदमते ख़ल्क़ के प्रोग्राम के अवसर पर एक ग्रुप फ़ोटो।

5.5.2024 को ज़िला एर्नाकुलम (केरला) में आयोजित मेडिकल कैंप के इफ़्तिताही प्रोग्राम का दृश्य।

19-2-2024 को बटाला के एक हस्पताल में मरीज़ों को फ़ल तक़सीम करने के अवसर पर एक दृश्य।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم   نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم   وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 22   अप्रैल/मई 2024   **Issue -03**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय : "ख़िलाफ़त अमन को सुनिश्चित करती है"	4
निवेदन - आयत-ए-इस्तख़्लाफ़ से ख़िलाफ़त का स्पष्ट प्रमाण	6
लेख : सीरत हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल अव्वल रज़ि	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ○

अनुवाद: तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा। जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया। और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया, अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा। और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शांतिपूर्ण अवस्था में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी उपासना करेंगे, मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगे। और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। (अन्नूर-156)

दर्सुल हदीस

عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِيْكُمْ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً فَيَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ يَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَكَتَ۔ (مسند احمد جلد ۴ صفحہ ۲۷۳ مشکوۃ کتاب الرقاق باب الانذار والتحذیر)

अनुवाद - हज़रत हुज़ेफा रज़ियल्लाह अन्हु रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तक अल्लाह चाहेगा, तुम में नुबुव्वत स्थापित रहेगी, फिर वह इसे वापिस ले लेगा और खिलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नुबुव्वत स्थापित किया जाएगा। फिर जब अल्लाह चाहेगा तो यह नेमत छीन लेगा। तब उसकी प्रारब्ध के अनुसार एक अत्याचारी राज्य की स्थापना होगी (जिससे प्रजा त्रस्त होगी) जब यह दौर समाप्त होगा तो उसके दूसरे प्रारब्ध के अनुसार इस से भी बढ़ कर अत्याचारी राज्य की स्थापना होगी यहाँ तक कि अल्लाह का जोश रहम में आएगा और इस अत्याचार के दौर को समाप्त कर देगा। इस के बाद खिलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नुबुव्वत स्थापित होगी। यह कह कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप हो गये।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

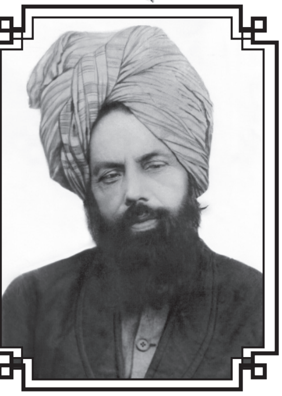

तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का देखना ज़रूरी है और उस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह शाश्वत है जिस का सिलसिला कयामत तक समाप्त नहीं होगा

यह खुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़रमाता है

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ (अल् मजादिल: आयत 22)

और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला दृढ़ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक चलनी को वे दुनिया में फ़ैलाना चाहते हैं उसका बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है। लेकिन उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यत: एक नाकामी का भाय अपने साथ रखती है, विरोधियों को हँसी और ठट्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता। और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है तथा ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ हद तक अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं। अर्थात् दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता है:(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। (2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात् कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिंता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागी विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है। सो हे प्रियो जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिट कर दिखलादे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास ब्यान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिय्या में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूंगा सो आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात् वह दिन आवे जो सदैवी वचन का दिन है वह हमारा ख़ुदा वचनों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वचन दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कामय र हे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे।

(रिसाला अल्-वसिय्यत, रूहानी खज़ाइन, खंड 20, पृष्ठ 304-306)

सम्पादकीय "ख़िलाफ़त अमन को सुनिश्चित करती है"

हम सब जानते हैं कि ख़िलाफ़त की नेअमत का आरंभ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के तुरंत बाद हुआ जब कि इस शोकपूर्ण समय की वजह से सहाबा सख़्त निढाल थे। हज़रत उमर[रज़ि] ग़म से चूर हो कर कह रहे थे कि जो कहेगा कि रसूल-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए हैं, मैं इस का सिर क़लम कर दूँगा। तब ख़ुदा के परिवर्तन से हज़रत अबु बकर सिद्दिक[रज़ि] को तौफ़ीक़ दी और वह सामने आए आयत: "وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ"(आले इमरान 145) की तिलावत की जिससे सहाबा को यक़ीन हो गया कि विसाल-ए-नबवी हो चुका है। जज़्बात में ठहराव पैदा हुआ और सहाबा ने मश्वरा के बाद हज़रत अबु बकर सिद्दिक[रज़ि] को ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया। भय की हालत अमन में बदल गई और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का बाबरकत निज़ाम शुरू हुआ जिससे मुस्लमानों में अमन और एकता पैदा हो कर मुस्लमान तरक़्क़ी की तरफ़ गामज़न होने लगे। ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के दौरान हर ख़लीफ़ा की वफ़ात पर हर दफ़ा वाद-ए-इलाही के मुताबिक़ नए ख़लीफ़ा के इंतिख़ाब के बाद ख़ौफ़ की हर हालत अमन में बदलती रही।

दौर-ए-आख़रीन में जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विसाल के बाद हक़ीक़ी ख़िलाफ़त का क़ियाम हुआ। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब "अल्-वसिय्यत' में ज़िक्र फ़रमाया था कि यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला दो क़ुदरतें दिखाता है। नबी की वफ़ात पर क़ुदरत-ए-सानिया ख़िलाफ़त की सूरत में आती है और अल्लाह तआला गिरती हुई जमात को सँभाल लेता है। ख़ुदा तआला का यह वादा बड़ी शान से पूरा हुआ और सारी की सारी जमाअत-ए-अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के हाथ पर जमा हो गई और बिना किसी मतभेद के सबने बैअत में शमूलीयत की जिसके नतीजा में अल्लाह तआला का वाअदा पूरा हुआ, ख़ौफ़ के बादल छट गए और अहमदियत का क़ाफ़िला तरक़्क़ी की राहों की तरफ़ बढ़ने लगा।

हज़रत मसीह मौऊद ने "अल्-वसिय्यत' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि ख़िलाफ़त शाश्वत है जिसका सिलसिला क़ियामत तक समाप्त नहीं होगा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के विसाल के वक़्त चंद नामवर मगर नादान लोगों ने ख़िलाफ़त की नेअमत से मुँह मोड़ा। लेकिन वही हुआ जिसका वादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिया था। जमात की अक्सरीयत ने ख़ुदाई तसर्रुफ़ से अंजुमन की बजाय ख़िलाफ़त के हक़ में राय दी और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एक बार फिर जमात में ख़िलाफ़त का निज़ाम दृढ़ आधारों पर क़ायम हो गया। और यह सिलसिला हज़रत मुस्लेह मौऊद की बाबरकत नेतृत्व में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आधी सदी से अधिक समय तक आगे से आगे बढ़ता गया।

ख़िलाफ़त-ए-सानिया,साल्सा और राबिया में जमात पर कई ख़ौफ़ की हालतें आएं लेकिन अल्लाह तआला ने हमेशा ख़िलाफ़त के ज़रीया अमन की हालत में तबदील कर दिया। दरअसल ख़िलाफ़त न सिर्फ अहमदियों के लिए बल्कि सारी दुनिया के लिए अमन की ज़मानत है।

2012ई० में हुज़ूर-ए-अनवर ने बरसल्ज़ में यूरोपीयन पार्लीमैंट से ख़िताब फ़रमाया। इस मौक़ा पर इस ख़िताब से प्रभावित हो कर Bishop Dr Amen Howard जिनेवा (स्विट्ज़रलैंड) कहते हैं :

"यह शख़्स जादूगर नहीं लेकिन उनके अलफ़ाज़ जादू का सा असर रखते हैं। लहजा धीमा है लेकिन उनके मुँह से

निकलने वाले शब्द असमान्य शक्ति, वैभव और प्रभाव अपने अंदर रखते हैं। इस तरह का जुर्रत मंद इन्सान मैंने अपने ज़िंदगी में कभी नहीं देखा। आपकी तरह के सिर्फ तीन इन्सान इस दुनिया को मिल जाएं तो विश्व शांति के हवाले से इस दुनिया में हैरत-अंगेज़ इन्क़िलाब महीनों नहीं बल्कि दिनों के अंदर बरपा हो सकता है और यह दुनिया अमन और भाईचारे का गहवारा बन सकती है। मैं इस्लाम के बारह में कोई अच्छी राय नहीं रखता था। अब हुज़ूर के ख़िताब ने इस्लाम के बारे में मेरे नुकता-ए-नज़र को बिलकुल तबदील कर दिया है।"(अहमदिया गज़्ट कैनेडा मई 2018 सफ़ा 20)

मुबारक वह क़ियादत मान ली जिसने ख़िलाफ़त की
कि वह महफ़ूज़ हर ख़ौफ़-ओ-ख़तरा, हर फ़ित्नागर से है

(मुकर्रम मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब अमृतसरी)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें ख़िलाफ़त का सुल्तान-ए-नसीर बनाए। आमीन

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

आयत-ए-इस्तख़लाफ़ से ख़िलाफ़त का स्पष्ट प्रमाण

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

कुछ लोग आयत-ए-इस्तख़लाफ़ से मुस्लमानों में बादशाहत क़ायम होने का वादा मुराद लेते हैं, हालाँकि इस आयत में स्पष्ट रूप से एक दीनी व रूहानी ख़िलाफ़त पर रोशनी पड़ती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफ़ा-ए-अहमदियत के आदेशों की रोशनी में इस आयत के विभिन्न पक्षों का वर्णन यहां पेश करना उचित है।

(1) इस रूहानी ख़िलाफ़त का वादा मोमिनों और सद्कर्म बजा लाने वालों के साथ है कि सिर्फ इन्हीं में से ख़लीफ़ा होंगे मानो ईमान और सद्कर्म रुहानी ख़िलाफ़त की बुनियादी शर्त है, बादशाहत के लिए यह लाज़िम नहीं।

(2) इस आयत के इलावा बाक़ी कई और कुरआनी आयात में भी अल्लाह ताआला ने ख़िलाफ़त की निसबत अपनी ज़ात की तरफ़ की है। जो उस की पवित्रता और महानता पर दलालत करती है जो बादशाहत को नहीं।

(3) बे-शक बज़ाहिर मोमिनों की जमात अपने में से बेहतरीन व्यक्ति को इंतिख़ाब बतौर ख़लीफ़ा करती है मगर वादा इलाही ''ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है' से साफ़ ज़ाहिर है कि वास्तव में अल्लाह तआला मोमिनों के दिलों पर तसल्लुत फ़र्मा कर अपने पसंदीदा, बेहतरीन नेक और मुत्तक़ी शख़्स पर जमा कर देता है। जबकि बादशाहों में नेक-ओ-बद और ज़ालिम-ओ-जाबिर हर किस्म के बादशाह हो सकते हैं

(4) खलीफ़ा की बाक़ी अलामात और काम जो इस आयत में बयान हैं वह उनके रुहानी और दीनी मुक़ाम पर दलील हैं उदाहरण के तौर पर यह कि अल्लाह तआला इन खलीफ़ा के ज़रीया दीन इस्लाम को तरक़्क़ी अता फ़रमाता है। केवल दुनयवी फ़ुतूहात नहीं बल्कि दीनी-ओ-रुहानी तरक़्क़ी साथ-साथ होती है।

(5) इस आयत में खलीफ़ा की इस्मत का ज़िम्मा ख़ुद अल्लाह तआला ने ले लिया है कि वह अल्लाह तआला के पसंदीदा दीन और तरीक़ पर ही चलते हैं। आम दुनयवी बादशाहों से यह वादा नहीं है।

(6) दीनी-ओ-रुहानी खलीफ़ा को अल्लाह तआला का समर्थन और सहायता ज़रूर नसीब होती है और ख़लीफ़ा बरहक़ के ज़रीया अल्लाह तआला उस की जमात के ख़ौफ़ को अमन में बदल देता है। यह वाअदा भी आम दुनयवी बादशाहों और हाकिमों के साथ लाज़िम नहीं है।

(7) दीनी व रूहानि खलीफ़ा-ए-तौहीद

हक़ीक़ी और इबादत इलाही को क़ायम करने वाले होते हैं। मानो अपने ज़माने में अल्लाह के कामिल और मोहिद बंदे वही होते हैं और दुनिया में भी उनके ज़रीया तौहीद और इबादत क़ायम होती है और ख़ुदा के इबादतगुज़ार बंदे पैदा होते हैं जबकि हर बादशाह के ज़रीया यह नेक काम सरअंजाम नहीं पाते

(8) ऐसे खलीफ़ा-ए-रुहानी की तमाम अलामात सदाक़त देखकर उनका इनकार करने वाले लोग नाफ़रमान कहलाते और अह्द शिकनी के मुर्तक़िब होते हैं जबकि बादशाहों पर ईमान लाना ज़रूरी नहीं न ही उनके रुहानी मुक़ाम का इनकार करने वाले फ़ासिक़ हैं।

नबी करीम ने ख़िलाफ़त के क़ियाम को इलाही सुन्नत क़रार देते हुए फ़रमाया कि

مَا كَانَتْ نُبُوَّةٌ قَطُّ إِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ

(कंज़ुल आमाल जिल्द 11 सफ़ा 216)

कि कोई नबुव्वत ऐसी नहीं हुई जिसके बाद ख़िलाफ़त क़ायम न हुई हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त आला मिनहाज-ए-नुबुव्वत के पहले दौर की पेशगोई अपने मान बाद बयान फ़रमाई थी जो ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की सूरत में पूरी हुई

उम्मत मुहम्मदिया में ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के बाद ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नुबुव्वत के दूसरे दौर की पेशगोई दौरे मुलूकियत यानी ज़ालिम-ओ-जाबिर बादशाहतों के अदवार के बाद के ज़माने से ताल्लुक़ रखती है। जिसे उलमा सलफ़ ने उम्मत में से मबऊस होने वाले मसीह नबीउल्लाह और मह्दी मौऊद के ज़माना से मुंसलिक किया है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद 27 मई 1908 को ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया का क़ियाम अमल में आया है। दुआ है कि अल्लाह तआला तमाम मुस्लिम उम्मा को ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के झंडे के नीचे जमा हो कर ख़िलाफ़त-ए-इस्लामीया के तमाम समरात से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ फ़रमाए। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

सीरत हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल अव्वल[रज़ि]

(दरबार-ए-शाही से दरबार-ए-शाही तक)

मुहम्मद कलीम ख़ान
मुबाल्लिग़ इंचार्ज मडीकरी, सूबा कर्नाटक

इमान अर्थात आस्था के लिहाज़ से सबसे उच्चतम अल्लाह तआला के वजूद पर ईमान लाना है। फिर तर्तीब के लिहाज़ से फ़रिश्तों पर फिर आकाशीय पुस्तकों पर फिर रसुल फिर तक़दीर इत्यादि। मगर नबी और रसूल अलैहिमुस्सलाम ही अकेले अंश हैं जो बशर के प्रतिरूप हैं। (بشر مثلكم:الكهف) बशर इन्सान ही वह मख़लूक़ हैं जिसका मुक़ाम कोई ख़ास निर्धारित नहीं है। क्योंकि उस को आज़ादी दी गई है। चाहे तो यूं करे और चाहे तो यूं न करे। इस के इलम के लिए OPTIONS खुले हैं जबकि अल्लाह तआला की दूसरी मख़लूक़ जो ग़ैर अज़ बशर हैं उनके मुक़ामात मुक़र्रर हैं।

चुनांचे ये जिन्स यानी बशर को अबद बनाने के लिए पैदा करते हुए कसब आमाल के लिए FLEXIBILITY की आज़ादी भी दी गई है। इस के नतीजा में ये बशर ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त करते हुए बुलंदी की इस हद तक पहुंच जाता है जहां तक हज़रत जिब्राईल भी नहीं पहुंच सके। फिर दूसरी तरफ़ अबद बनने की विभिन्न सिम्त पर चलते चलते यहां तक पहुंच जाता है जहां तक शैतान लईन भी नहीं पहुंचता।

अत: यही बशर मुक़ाम "क़ाबा क़ौसैन" तक पहुंच सकता है। और यही बशर नीचता की हद तक भी गिर जाता है। अब बशर इन्सान के लिए रहनुमा एक "बशर" ही हुआ। जिसे नबी और रसूल कहते हैं मगर अल्लाह तआला की तक़दीर ऐसी है कि चाहे तो एक समय में एक वाहिद नबी भेजे या चाहे तो एक वक़्त एक से ज़्यादा नबी भेजे, या चाहे तो लंबा अरसा "नबी" के वजूद से ख़ाली भी छोड़ दे।

बनीनौ इन्सान से हज़ारों माओं से बढ़कर मुहब्बत करने वाला ख़ुदा अज़राह करम बशर इन्सान के लिए नबुव्वत की बरकात को ख़िलाफ़त की बरकत से लंबा कर देता है। और ख़िलाफ़त के मन्सब पर फ़ाइज़ होने वाले ख़ुद भी बशर ही होते हैं। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि तुम्हारे लिए मेरी सुन्नत और मेरे खलीफ़ा राशिदीन की सुन्नत भी अनुकरण योग्य है। और यही "मीज़ान" भी कहला सकते हैं। क्योंकि उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत मिली हुई है।

अँबिया किराम और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन मासूम होते हैं। और इसी मज़मून को तफ़सील के साथ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अलमुस्लेह मौऊद ने अपनी किताब ख़िलाफ़त अला मिनहाज नुबुव्वत में ज़िक्र फ़रमाया है।

"तमाम अँबिया मामूर भी होते और ख़ुदा के क़ायम करदा ख़लीफ़ा भी। जिस तरह हर इन्सान एक तौर पर ख़लीफ़ा है इसी तरह अँबिया भी ख़लीफ़ा होते हैं मगर एक वह खलीफ़ा होते हैं जो कभी मामूर नहीं होते। गो इताअत के लिहाज़ से उनमें और अँबिया में कोई फ़र्क़ नहीं होता। इताअत जिस तरह नबी की ज़रूरी होती है वैसे ही खलीफ़ा की ज़रूरी होती है। हाँ इन दोनों इताअतों में एक इमतियाज़ और फ़र्क़ होता है मगर ख़लीफ़ा की इताअत इस लिए नहीं की जाती कि वह वही इलाही और तमाम पाकीज़गी का मर्कज़ होता है बल्कि इस लिए की जाती है कि वह तनफ़ीज़ वह्यी इलाही और तमाम निज़ाम का मर्कज है। इसी लिए वाक़िफ़ और अह्ले इल्म लोग कहा करते हैं कि अँबिया को इस्मत कबरी हासिल होती है और खलीफ़ा को इस्मत सुग़रा।"(ख़िलाफ़त अला मिनहाज अलंबो जिल्द सोम सफ़ा 61 मतबूआ क़ादियान)

इस पस-ए-मंज़र में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलअव्वल मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्ना का वजूद भी खलीफ़ा-ए-राशिदीन के ज़मुरा में आता है। फ़िलवक़्त चंद

वाक़ियात पेश किए जाते हैं। जिनसे क़ाबिल तक़लीद उस्वा का इलम होता है। साहिब-ए-इस्मत सुग़रा हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह उलअव्वल रज़ी अल्लाह तआला अंहो की ज़िंदगी में एक दौर ऐसा आया जब आप आज़ाद थे। यानी किसी की बैअत का असर नहीं था। फिर दूसरा दौर ऐसा आया है जब हज़रत इमामुज़्ज़मान अलैहिस-सलाम की बैअत से मुशर्रफ़ हो कर आपने अपनी चाल चलन का अज़ीमतरीन नमूना फ़रमाया।

पहले दौर में आप अपने इलम व हुनर से साहिब रोज़गार थे। और इस से अपने और अपने मुताल्लिक़ीन की कफ़ालत फ़रमाते थे। इस मरहला में आपको एक शहर पिंड दादन ख़ान के एक स्कूल में हेडमास्टर की हैसियत से सरकारी मुलाज़मत मिली थी। और जहां तक मुलाज़मत का सवाल है वहां कारकुनान के ऊपर आफ़िसरान भी हुआ करते थे। और अफ़्सर से वास्ता पड़ने पर कारकुनान का रद्द-ए-अमल ज़ेर ग़ौर रहता है कि किस तरह शरई उमूर को मद्द-ए-नज़र रखते हुए पेश आमदा सूरत-ए-हाल पर सुलूक किया जाना चाहिए। चुनांचे इसी दौर हैड मास्टरी का एक सबक़ आमोज़ वाक़िया है जिसे किताब (हयात सफ़ा 15,16) और तारीख़ अहमदियत जिल्द 3 सफ़ा 32 में हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब के अपने बयान से महफ़ूज़ किया गया है। मगर एक ग़ैर अज़ जमात अख़बार की शहादत यहां नक़ल करना ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है। चुनांचे अख़बार पर्चम लायलपूर फरवरी 1959 में यह अजीब वाक़िया शाय हुआ है। जिसे माहाना अलफ़ुरकान रब्वाह मार्च 1959 के हवाले से दर्ज किया जाता है।

"सबसे पहले क़ादयानी ख़लीफ़ा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मरहूम के ख़ास मुसाहिबीन में से एक नब्बाज़ कामिल हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी थे। जिनका तिब्ब की दुनिया में काफ़ी एज़ाज़ है। हकीम साहिब मरहूम कुछ अरसा तक मुदर्रिस भी रहे। इन दिनों इन्सपैक्टर साहिबान घोड़ों पर सवार हो कर दौरों पर स्कूलों में आया करते थे। एक रोज़ इन्सपैक्टर साहिब वारिद-ए-स्कूल हुए। और इस ख़्याल से कि हेडमास्टर चल कर आए। और घोड़े की बाग पकड़कर मुझे उतारे। सदर बैरूनी दरवाज़ा पर आकर रुक गए। इत्तिफ़ाक़न मौलवी-साहब (हेडमास्टर) इस वक़्त खाना खा रहे थे उन्होंने भी देख लिया कि इन्सपैक्टर साहिब बाहर घोड़े पर सवार खड़े हैं। लेकिन खाना खाने के दौरान में उठना आदाब तआम के ख़िलाफ़ था। आप ने चपड़ासी को दौड़ाया कि दौड़ कर पकड़ो और साहिब को ले आओ। इन्सपैक्टर साहिब खैर मक़दम के वक़्त तन्हा चपड़ासी को देखकर आग बगूला हो गए। और सख्त लहजे में बोले "अबे मौलवी कहाँ है जवाब मिला हुज़ूर खाना खा रहे हैं।"वह देख नहीं रहा कि मैं आ चुका हूँ "जाओ.. यह कह कर बदस्तूर ज़ैन पर डटे रहे और न उतरे। मौलवी साहब ने अत्यंत धैर्य से खाना खाया। हाथ मुँह धो कर कुल्ली वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर कहीं आध पौन घंटा के बाद दरवाज़े पर पहुंचे। इन्सपैक्टर साहिब इसी तरह कसे बैठे थे। सलाम दुआ हुई। इन्सपैक्टर साहिब को घोड़े से उतारा और स्कूल के हाल कमरे में लाए। ग़ुस्से में भरे हुए इन्सपैक्टर ने कुर्सी पर बैठते ही फ़रमाया कि "मेरा पता है मैं आपकी सनद के टुकड़े टुकड़े कर सकता हूँ। "मौलवी-साहब ख़ामोश रहे। और चंद मिनटों बाद "पाँच मिनट इजाज़त' कह कर मुल्हिक़ा कमरे में आए। सूटकेस में से अपनी सनद निकाली और ख़ुद ही पुर्ज़ों में तक़सीम करके साहिब तक पहुंचे। यही काम था जिसके मुताल्लिक़ मुझे धमकी दे रहे थे ये काम तो मैं भी कर सकता हूँ और आपसे बेहतरीन तरीक़ पर कर सकता हूँ। अब आप स्कूल में बैठें में जा रहा हूँ।

इन्सपैक्टर साहिब हक्का बका रह गया कि इतनी इज़्ज़त नफ़स के मालिक मुदर्रिस से पाला पड़ा। अब इन्सपैक्टर साहिब मिन्नतें कर रहे हैं। लेकिन मौलवी-साहब बमिसदाक़ :

"बरूईं दाम बर मुर्ग़ वगरना
कि मनकारा बुलंद सत आशयाना

बिलकुल नहीं मान रहे ताकि इस ख़ुश-आमद पसंद अफ़्सर के मुँह पर ख़ुद्दारी का ज़बरदस्त तमांचा रसीद करते हुए यह जा वह जा स्कूल की चार-दीवारी को फाँद गए। (अलफ़ुरकान मार्च 1959 सफ़ा 7)

मुलाज़मत और रोज़ी के हवाले से हाकिम-ए-वक़्त से ग़ैरत मंदाना सुलूक। दरबार-ए-शाही में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का यह आदर्श

अनुसरण योग्य है। फिर एक और वाक़िया भी अजीब गुज़रा कि कश्मीर के एक रईस थे जिनके दरबार का वाक़िया यूं लिखा है :

"एक बार एक बहुत बड़ा डाक्टर कश्मीर में एक रईस के हाँ बुलाया था हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल भी संयोगवश वहां जा निकले। वहां औरत और मर्द की समानताओं पर चर्चा हो रही थी और वह डाक्टर साहिब समानता पर बहुत ज़ोर दे रहे थे। हज़रत मौलवी साहब ने पूछा क्या आपके हाँ औलाद है? मौसूफ़ ने कहा कि हाँ। तीन साल का एक लड़का मौजूद है। यह मालूम करके आप सहसा उठे और डाक्टर साहिब की छातियां टटोलना शुरू कर दीं। डाक्टर हैरान था कि यह क्या हो रहा है? आख़िर उसने अपने मेज़बान रईस से पूछा कि यह साहिब कौन हैं? और उन्होंने ऐसी बेजा हरकत क्यों की है? इस रईस ने कहा कि यह बहुत बड़े आदमी हैं। मेरी क्या मजाल है कि मैं उनसे कुछ दरयाफ़त कर सकूँ। आपने बला इंतिज़ार फ़रमाया कि साहिब! आपने अभी औरत और मर्द में बराबरी का वर्णन किया है। आपकी जोरू तो बच्चा जन चुकी। अब आपकी बारी है। मैं देखना चाहता था कि क्या आप बच्चा जनने के लिए तैयार हैं? अगर नहीं तो बराबरी कैसी? यह सुनकर वह डाक्टर साहिब चुप रह गए। और इस रईस ने क़हक़हा मार कर डाक्टर साहिब को कहा कि जवाब दो। डाक्टर साहिब ने खिसियाना हो कर कहा वाक़ई हमारी ग़लती है। हम बिना सोचे समझे यूरोप की तक़लीद करते हैं। (हयात-ए-नूर 109)

एक और वाक़िया का ज़िक्र हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए[रज़ि] फ़रमाते हैं कि :

"एक दफ़ा जब हमारा छोटा भाई मुबारक अहमद बीमार था और इसी बीमारी में फ़ौत हो गया और इस की तबीयत ज़्यादा ख़राब हो गई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे हाथ ही हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल को कहला भेजा। उस वक़्त मुबारक अहमद की चारपाई दारुल मसीह के सेहन में बिछी हुई थी। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम उसी चारपाई पर तशरीफ़ रखते थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल तशरीफ़ लाए। मुबारक अहमद को देखा। और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के साथ बात करने के लिए एक सैकिण्ड की झिझक और ताम्मुल के बग़ैर चारपाई के साथ सेहन में ही नंगी ज़मीन यानी फ़र्श-ए-ख़ाक पर बैठ गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम ने शफ़क़त से फ़रमाया कि मौलवी-साहब चारपाई पर बैठें। इस वक़्त बस यही एक चारपाई थी। जिस पर मुबारक अहमद लेटा हुआ था। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम बैठे थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल[रज़ि] सरक कर चारपाई के क़रीब हो गए। और एक हाथ चारपाई के एक किनारे पर रखकर बदस्तूर फ़र्श पर बैठे-बैठे अर्ज़ किया। हज़रत मैं ठीक बैठा हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम ने फिर मुहब्बत के साथ फ़रमाया और इस दफ़ा ग़ालिबन हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल[रज़ि] की तरफ़ अपना हाथ बढ़ा कर फ़रमाया कि मौलवी-साहब यहां मेरे साथ चारपाई पर बैठें। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल[रज़ि] नाचार उठे और चारपाई के एक किनारे पर इस तरह झुक कर बैठ गए कि बस शायद चारपाई के साथ आपका जिस्म छूता ही होगा। यह नज़ारा मेरी आँखों देखे का है और तरतालीस साल गुज़र जाने के बावजूद मेरा दिल अभी तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम की इस बेनज़ीर शफ़क़त और हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के इस बेनज़ीर अदब-ओ-तवाज़ो से इस दर्जा मुतास्सिर है कि गोया यह कल का वाक़िया है।

(6 दिसंबर 1950 बहवाला मज़ामीन बशीर जिल्द 2 सफ़ा 1053)

आज हम सब का फ़र्ज़ है कि अपने अंदर नूर यक़ीन भरते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल[रज़ि] की तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पैरवी करें। दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको ख़िलाफ़त के हक़ीक़ी सुल्तान-ए-नसीर बनने की तौफ़ीक़ फ़रमाए। आमीन

★ ★ ★

31.3.2024 को श्री मुहम्मद सिफ़ारत साहिब नाइब सदर शिमाल मशरिक़ी हिन्द की सदारत में आयोजित रिफ़्रेशर क्लास 24 परगना (वेस्ट बंगाल) के स्टेज का दृश्य ।

5.5.2024 को श्री एम ताजूद्दीन साहिब नाइब सदर जुनूबी हिन्द की सदारत में आयोजित त्रिसूर, पालक्काड (केरला) के रिफ़्रेशर क्लास के स्टेज का एक दृश्य।

5-5-2024 को आयोजित ओडिशा के पिकनिक के अवसर पर एक ग्रुप फ़ोटो ।

28-4-2024 को आयोजित कन्नूर, कासरगोड (केरला) के पिकनिक के अवसर पर एक ग्रुप फ़ोटो ।

03.05.2024 को हैदराबाद के अज़ीज़ ज़ईम अहमद वल्द नसीम अहमद की तक़रीब आमीन के मौक़ा पर श्री तनवीर अहमद साहिब नाइब सदर मग़रिबी जुनूबी हिन्द, हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़ साहिब एडीशनल क़ाइद उमूमी।

5-5-2024 को आयोजित लोकल सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह जमशेदपुर (झारखण्ड) के स्टेज का दृश्य।